मनुष्य तन हीरो सो पायो रे .....

मनुष्य तन हीरो सो पायो रे मनुष्य तन हीरो सो पायो।
अरे ! ऐसो हीरो पाय राम ने क्यों तू बिसरायो।
मनुष्य जन्म हीरो सो मिलियो, सरे मुफ्त में मती गमाय,
जो तू मुफ्त में गमा दियो तो फेर मिले नहीं आय।।

मनुष्य तन . . .

घणी गयी, थोड़ी रही, सरे अब तो हरि गुण गाय,
हे ! हरि रा गुण गायसे तेरा पाप–करम मिट जाय।
मनुष्य जन्म तू पाय के, सरे मोह–माया ने छोड़
ऐ ! सच्चा नाम हरि का लीजे इनसे नातो जोड़।

मनुष्य तन . . .

अरे सतगुरू हेला देय गया अरे जाग सके तो जाग,
मना रे जाग सके तो जाग
चैन कहे परपंच छोड़ के हरि के भजन में लाग।

मनुष्य तन . . .

टूटी की बूटि नहीं, तो भज श्री नन्दकुमार।
कौन संभाले मोहन बिन, नैया की पतवार।।